Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

संगीतज्ञ सत्गुरू जगजीत सिंह जी का संगीत के क्षेत्र में योगदान

MANMEET KAUR

Research Scholar, Desh Bhagat University Mandi, Gobingarh, Punjab

सार-संक्षेपिका

संगीत जीवन की आत्मा है, प्राण है। संगीत के अभाव में प्राणी जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। प्राचीन समय में प्रकृति के मधुर संगीत जैसे झरनों की कल-कल, पत्तों की सरसराहट, कलरव नाद ही प्राणी मात्र के दुःखों एवं विषाद के क्षणों को आनन्ददायक एवं सुखी बनाने के साधन थे। समय परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए संगीत वाद्यों आदि का भी आविष्कार हुआ और शास्त्रीय संगीत और गुरबाणी कीर्तन की परम्परा ने सृष्टि में नए संगीत की सृजना की। अनेक संस्थाओं एवं सम्प्रदायों ने संगीत विरासत को संभालते हुए नये वाद्यों एवं गायन शैलियों का विकास किया। ऐसा ही एक सम्प्रदाय है 'नामधारी सम्प्रदाय' जो कूका नाम से भी विख्यात है। इस सम्प्रदाय के गुरूओं ने प्राचीन संगीत विरासत विशेषतः गुरबाणी संगीत परम्परा को जीवित रखने के लिए सर्वस्व समर्पित कर दिया। गुरू परम्परा में सत्गुरू राम सिंह जी से लेकर प्रताप सिंह, सत्गुरू जगजीत और सत्गुरू उदय सिंह जी के विशेष योगदान ने गुरबाणी संगीत को तो संभाला ही साथ ही अनेक तालों एवं वाद्यों की रचना की।

शोध-प्रविधि: प्रस्तुत शोध-पत्र में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक विधि का प्रयोग किया गया है।

बीज शब्द: नामधारी सम्प्रदाय, आदर्श व्यक्तित्व, नए वाद्य, नई तालें, कीर्तन परम्परा, संगीत का प्रसार।

भूमिका

हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक, समष्टिपरक एवं उदार बनाने में संगीत विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। संगीत अर्थात् सुर, ताल, लय, वाद्य ध्वनि में ऐसी अद्भुत विलक्षण शक्ति है जो विषाद ग्रस्त और निराशाजनक मन में नव उत्साह, नव चेतना जागृत करके मानव चित्त को क्षण में हर्षित एवं तृप्त कर देता है। वाद्य यन्त्रों की गूंज और गायन दोनों ही मन को आत्मिक शान्ति प्रदान करते हैं। संगीत श्रवण के समय मानव एक अलौकिक वातावरण में स्वयं को अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में लौकिक दुःखों, कष्टों की अनुभूति का प्रश्न ही नहीं रह जाता। संगीत के दैवीय प्रभाव को शताब्दियों से जन सामान्य ने अनुभव किया और इसे जीवित रखने का अथक प्रयास किया। विभिन्न सम्प्रदायों आदि द्वारा इस विरासत को संभालने का यथेष्ट प्रयास किया गया है। ऐसा ही एक सम्प्रदाय नामधारी सम्प्रदाय है, जो संगीत के विकास, प्रचार में विशेष योगदान देने के कारण वैश्विक स्तर पर विलक्षण पहचान का धारणी है। नामधारी सम्प्रदाय जिसे 'नामधारी पंथ' के नाम से भी जाना जाता है, ने संगीत को आत्मिक एवं मानसिक एकाग्रता प्रदान करने वाली ईश्वरीय वरदान माना है। ईश्वर के इस वरदान को इन्होंने अनेक गायन शैलियों के माध्यम से जन-सामान्य तक पहुँचाया। इस सम्प्रदाय की सबसे बड़ी विशेषता गुरबाणी कीर्तन द्वारा जन सामान्य को संगीत के साथ जोड़ना है। इस सम्प्रदाय के संस्थापक से लेकर आगे आने वाले गुरूओं ने गुरबाणी संगीत की विरासत को न केवल संभाला, अपितु गुरूओं द्वारा रचित नई बंदिशों, नई गायन शैलियों और नव वाद्य निर्माण ने वैश्विक स्तर पर एक व्यापक आयाम प्रदान किया। इसी परम्परा में सत्गुरू प्रताप सिंह जी के सुपुत्र सत्गुरू जगजीत सिंह जी द्वारा गुरूगद्दी संभालने पर इस दिव्य विरासत को संभालने में विशेष योगदान रहा है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

सत्गुरू जगजीत सिंह जी का जन्म 22 नवम्बर 1920 ई. को श्री भैणी साहिब की पवित्र धरती पर माता भूपेन्द्र कौर और पिता सत्गुरू प्रताप सिंह जी के घर हुआ। घर की पहली संतान होने के कारण आपके जन्म पर सभी ने बेअंत खुशी अनुभव की। जिस कारण संगत आपको बेअंतजी बुलाती थी। किन्तु बाद में आपका नाम जगजीत सिंह रखा गया।

आपके पिता सत्गुरू प्रताप सिंह संगीत विशारद होने के साथ-साथ संगीत के प्रचार के प्रति अति सजग थे। अतः आपको संगीत की शिक्षा और संगीत प्रेम विरासत में प्राप्त हुआ। आपके पिता ने 4 वर्ष की आयु में ही आपको शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देनी शुरू कर दी। उसके पश्चात् उस्ताद हरनाम सिंह 'चविंडा' (अमृतसर) को आपका संगीत शिक्षक नियुक्त किया गया। आगे आपने अपने उस्तादों हरनाम सिंह, जीवन सिंह, रहीम बख्श उधो खान आदि से ध्रुपद धमार, दिलरूबा वादन की शिक्षा लेते हुए ख्याल, तरानस, ठुमरी आदि की अनेक बंदिशें सीखते हुए भाई नसीर जी से पखावज वादन की शिक्षा ग्रहण की।

संगीत शिक्षा

बचपन से ही आप संगीत के प्रति समर्पित रहे। प्रातः तीन बजे से लेकर सूर्य उदय तक आप सतत संगीत साधना, अभ्यास करते और संध्या तक किसी न किसी रूप में संगीत का वातावरण छाया रहता। आपके दरबार में गुरू अर्जन देव जी के समय से चल रही धुनों और बंदिशों के अनुसार गुरबाणी कीर्तन होता। इस कीर्तन में आप सदैव उपस्थित रहते। इसके अतिरिक्त आप हिन्दुस्तानी संगीतकारों का सुनते और स्वयं भी गाकर सुनाते। गुरबाणी संगीत के अतिरिक्त लोक संगीत में भी आपकी विशेष रुचि रही। आपने पिता सत्गुरू प्रताप सिंह जी के दीवान और कीर्तन परम्परा से ही लोक संगीत की शिक्षा प्राप्त की। पिता के साथ लोक-संगीत गायन करते हुए आपने हल्ले के शब्द, आसा की वार, जोटियों के शब्द आदि सीखे।

सत्गुरू जगजीत सिंह जी की गायन शैली तलवंडी घराने की धुरपद गायकी से सम्बन्धित थी। आपने इस घराने की बंदिशों का विशेष गायन किया। ताऊस और दिलरूबा आपके प्रिय वाद्य थे। साधारण विधि के अनुसार ही गज से दिलरूबा और ताऊस का वादन और गायन करना आपका नियम था किन्तु इस वाद्य की वादन प्रक्रिया में विलक्षणता तब झलकती थी जब आप इन वाद्यों को लिटाकर अपने हाथों की पहली अंगुलियों के नाखून से चाबी के पास तरबों को छोड़ते थे। बिना गज से इन वाद्यों का वादन संगीत के प्रति आपकी असीम लगन का परिचायक है।

संगीत क्षेत्र में योगदान

सत्गुरू जगजीत सिंह ने संगीत को देश-विदेश तक प्रसरित करने के लिए अहम योगदान दिया। सुर ताल पर आपका इतना अधिकार था कि हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े कलाकार भी उनसे लयकारियां सीखने में संकोच महसूस नहीं करते थे। शास्त्रीय संगीत के रागों के अनुसार धुनों की रचना करते समय आधी, पौनी, सवाईया मात्राओं की संख्या अनुसार तालों की रचना करते थे। पौणे ग्यारह, सवा ग्यारह, सवा चैदह, पौणे आठ, तेरह सही सात बटा आठ मात्राओं में तालबद्ध बंदिशें श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत कीं। आपने कई नवीन तालों की रचना की और इन तालों के नाम अपने पूर्व नामधारी गुरूजनों के नाम जैसे- प्रताप ताल, हरि ताल, राम ताल आदि पर रखे। अपने गुरूजनों के प्रति ये आपकी असीम श्रद्धा और गुरू दक्षिणा रही।

आपकी रचित बंदिशों का वैशिष्ट्य है वह सामान्य बंदिशों की तरह साधारण, खाली, सम या तीन ताल की 10 वीं मात्रा पर नहीं उठती थीं, अपितु भिन्न-भिन्न मात्राओं से उठती थीं। सत्गुरू जी के पास ऐसी अनेक बंदिशें थी जो 1,2,3,4,5,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

....16 आदि मात्रा से उठती हैं। इनके बंदिश कोष में प्रचलित एवं अप्रचलित रागों में पुरातन, नवीन तथा स्वरचित बंदिशें शामिल हैं।

सिक्ख पुरुषों में कत्थक नृत्य का प्रारम्भ

संगीत के प्रति आपका समर्पण भाव आपको संगीत क्षेत्र में निरन्तर नए प्रयोग एवं आविष्कार करने के लिए प्रेरित करता रहा। इसी प्रेरणा के स्वरूप आपने सिक्ख पुरुषों में 'कत्थक नृत्य' प्रारम्भ करवाया। आपने अमर सिंह सुपुत्र श्री बली सिंह को लगभग 1978 ई. में कत्थक नृत्य की शिक्षा दिलवानी शुरू की। अमर सिंह ने शुरू में 5 वर्ष की शिखा श्रीमती रेवा विद्यार्थी से प्राप्त की। इसके पश्चात् गुरू शिष्य परम्परा अनुसार पण्डित बिरजु महाराज से कत्थक की शिक्षा ली। सत्गुरू जी ने गुरमति संगीत एवं शास्त्रीय संगी दोनों को एक समान स्थान दिया। कत्थक आप के शास्त्रीय संगीत के प्रति प्रेम का ही फल है। सिक्खों में इसका प्रचलन करके आपने नया इतिहास रच दिया।

प्राचीन बंदिशों की संभाल के प्रति जागरूक

संगीत में नई तालों आदि की सृजना के साथ-साथ सत्गुरू जगजीत सिंह जी ने लुप्त हो रही प्राचीन ध्वनियों, पऊडियों, पड़तालों आदि की बंदिशों बहुत जी सहजता से संभाला। आज भी ये सत्गुरू जी के गुरबाणी भंडार की शोभा हैं। इसके अतिरिक्त सत्गुरू जी ने संगीत खजाने में शास्त्रीय संगती की प्राचीन बंदिशों को भी संभाल कर रखा हुआ। सत्गुरू जी को शास्त्रीय संगीत की ब्रज, हिन्दी, पंजाबी, पहाड़ी इत्यादि भाषाओं में अनेक प्राचीन बंदिशें कठस्थ थीं। धुरपद, धमार, लक्षणगीत, तराना, चतूरग, सरगम गीत आदि आपके संगीत भण्डार की विशेष शोभा बने।

तलवंडी घराने की 'शंकरा राग' में एक बंदिश ''ख्वाजा अमीनुद्दीन पीर अजमेर आए'' प्रसिद्ध गायक राजन-साजन मिश्रा ने सत्गुरू जी से सीखी हुई है यह बंदिश। पण्डित राजन मिश्रा ने घर आए प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद शाहिद प्रवेज जी को सुनाते हुए बताया, ''हम सत्गुरू जी से यह रत्न ले आए हैं।'' यह सुन कर शाहिद प्रवेज जी ने कहा यह बंदिश ऐसी है कि समस्त जीवन की साधना एक ओर एवं यह बंदिश दूसरी ओर फिर भी इस बंदिश का भार अधिक है।

संगीत के सच्चे प्रचारक

सत्गुरू जगजीत सिंह जी का मूल ठिकाना श्री भैणी साहिब था। यहीं रहते हुए आपने संगीत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान दी। आपने संगीत का इतना प्रसार किया कि भैणी साहिब को संगीत का तीर्थ स्थान कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

सत्गुरू जी ने यहां श्री भैणी साहिब में उच्चकोटि के कलाकारों द्वारा प्रोग्राम करवाये और नामधारी बच्चों को उच्चकोटि के संगीतकारों का शिष्य बनाकर संगीत की शिक्षा दिलवानी शुरू की। जैसे-

-पण्डित शिव कुमार संतूर सम्राट के शिष्य श्री हरजेन्द्र पाल सिंह सुपुत्र सरदार मेला सिंह जब्लपुल (म.प्र.) श्री किरनपाल सिंह सुपुत्र संत सतबचन सिंह (इंग्लैंड)।

-सरोद सम्राट उस्ताद अमजद अली खान के शिष्य श्री गुरुदेव सिंह, श्री हरभजन सिंह।

- भारत के प्रमुख सारंगी वादक पण्डित राम नारायण जी को शिष्य के रूप में श्री सुरजीत सिंह सुपुत्र संत प्यारा सिंह (रमेश नगर दिल्ली), श्री अरविन्द्र सिंह श्री सुरेन्द्र सिंह सुपुत्र स्व. संत दर्शन सिंह 'मण्डी' दिए।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

- प्रसिद्ध बासुंरी वादक श्री हरि प्रसाद चैरसिया जी के शिष्य जम्मू केरी सतपाल सिंह बने। मधुर तबलावादक भारत प्रसिद्ध पण्डित सामता प्रशाद के शिष्य के रूप में सरदार अवतार सिंह 'अमृतसरी' दिए।

-देश के प्रसिद्ध तबला वादक पण्डित किशन महाराज के पास सत्गुरू जी ने श्री सुखविन्द्र सिंह 'पिंकी' सुपुत्र सरदार संतोख सिंह लांगरी भैणी साहिब, श्री सुखदेव सिंह जी, श्री सुखविन्द्र सिंह 'जालंधर' शिष्य बिठाए।

उक्त कलाकारों के अतिरिक्त पण्डित राम जी मिश्रा सुपुत्र पण्डित अणोखे लाल (बनारस), पण्डित बिरजु महाराज (नृत्य), उस्ताद इमरत खान (सितार) आदि को भी सत्गुरू जगजीत सिंह का आशीर्वाद एवं सान्निध्य प्राप्त हुआ।

नवीन वाद्य के आविष्कारक

डॉ शरन अरोड़ा के अनुसार, ''सत्गुरू जी ने एक नवीन वाद्य का आविष्कार किया। उस्ताद अमजद अली खां के 'सरोद घर' ग्वालियर में एक संगीत सभा हुई, जिसमें बलवंत सिंह ने गिलास वादन किया। इस वाद्य का उस समय कोई नाम न होने के कारण सत्गुरू जी ने उस्ताद अमजद अली खां साहिब से इस नवीन वाद्य का नाम रखने को कहा, तो उस्ताद ने इसका नाम 'नामधारी तरंग' रखा।

इस नवीन वाद्य के वादन के लिए कांच के 15 गिलास प्रयोग में लाए जाते हैं। इनकी संख्या राग में लगने वाले स्वरों की संख्या पर निश्चित होती है। कांच के गिलास किसी निश्चित स्थान पर टिका लिए जाते हैं। नीचे के स्वरों के लिए बड़े एवं उच्च स्वरों के लिए छोटे आकार के गिलासों का प्रयोग किया जाता है। जितनी स्वरों की तारता बढ़ेगी गिलास का आकार उतना ही कम होगा। गिलास में स्वर की आवश्यकता के अनुसार पानी डाला जाता है। जितना गिलास में अधिक पानी होगा, स्वरों की तारता उतनी ही कम हो जाएगी। गिलास के मुख (उपर का भाग) पर अंगूठे की घषर्ण से एक आकर्षक आवाज उत्पन्न होती है। जो बांसुरी एवं कुछ कुछ वायलिन के जैसे प्रतीत होती है। इस वाद्य पर मध्य एवं द्रुत लय की गतों का वादन किया जाता है। आरम्भ आलाप से किया जाता है उसके पश्चात गत वादन करते हुए तान और आलाप का प्रयोग किया जाता है।

विदेशों में संगीत का प्रसार

सत्गुरू जगजीत सिंह जी ने अपने देश में ही संगीत का प्रचार-प्रसार नहीं किया अपितु विदेशों थाइलैंड, यू.के. आदि में भी उन्होंने भारतीय संगीत को उच्च शीर्ष प्रदान करवाया। सत्गुरू जी पहली बार 1967 ई. में यू.के. गए। उनकी यात्राओं सम्बन्धी सही विवरण तो प्राप्त नहीं होता तथापि 1974 के बाद वे 29 बार विदेश गए। इन यात्राओं द्वारा दौरान सत्गुरू जी उच्चकोटि के कलाकार अपने साथ लेकर जाते। विदेशी लोगों विशेषतः भारतीय मूल लोगों की शास्त्रीय संगीत में रुचि उत्पन्न करने के लिए संगीत कार्यक्रम करवाते। सुबह-शाम गुरबाणी कीर्तन के अतिरिक्त संगीत की बैठकें भी करवाते। इसके अतिरिक्त सत्गुरू जी इंग्लैंड निवासी संगीत विद्यार्थियों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से अपने साथ कई बार किसी कलाकार विदेश भी नहीं लेकर जाते थे।

आदर्श व्यवहारवादी

लोक व्यवहार में भी सत्गुरू जी का व्यवहार अति विनम्र एवं उदार था। एक बार संगीत प्रेमी बीबी अनीता सिंह ने सत्गुरू जगजीत सिंह जी को किसी सम्मेलन में न बुलाने पर पश्चात्ताप किया तो सत्गुरू जी ने कहा यदि मुझे पता होता कि इस सम्मेलन का आयोजन अनीता सिंह ने किया है तो मैं स्वयं घर जाकर निमंत्रण पत्र ले आता।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी सत्गुरू जगजीत सिंह जी के आदर्श व्यक्तित्व एवं व्यवहार के साक्षी रहें हैं। उनका कहना था कि गुरू जी के साथ उनका सम्पर्क 1973 में हुआ। मुझे नामधारी सत्गुरू जी उस्ताद विलायत खान के पास उनके निवास स्थान पर ले गए। परम्परा अनुसार मुझे शिष्यत्व प्रदान करते हुए मेरा सितार सुना और कहा कि इस लड़के ने संगीत के सभी औजार इकट्ठे कर लिए हैं। अब इसे केवल यही बताना है कि कौन सा औजार कहां लगाना है। सत्गुरू जी ने स्वयं मेरे रहने और खाने-पीने का प्रबन्ध किया। ऐसा है उनका उदार व्यक्तित्व।

सत्गुरू जगजीत सिंह जी का ऐसा विलक्षण व्यक्तित्व एवं कर्म वर्तमान में संगीत विरासत संभालने के प्रति मानव को सजग करते हुए संगीत के महत्त्व एवं संदेश को वैश्विक स्तर पर प्रसरित करने के लिए प्रेरित करता है। संगीत के प्रति इनका समर्पण नामधारी पंथ के लिए ऐसा वरदान सिद्ध हुआ कि समस्त विश्व में यदि संगीत, गुरबाणी संगीत की बात की जाती है तो कहा जाता है कि संगीत यदि है तो नामधारियों के पास है। सत्गुरू जगजीत सिंह जी का इष्ट एवं साध्य केवल और केवल संगीत रहा। इन्होंने जीवन भर संगीत की भक्ति, आराधना और साधना की। उनकी साधना के परिणामस्वरूप नामधारियों को संगीत क्षेत्र में एक विशेष पहचान प्राप्त हुई और प्राचीन संगीत विरासत वर्तमान एवं भावी संगीत विद्यार्थियों, शोधार्थियों के लिए सुरक्षित है, सुरक्षित रहेगी।

निष्कर्ष

सत्गुरू जगजीत सिंह जी अर्थात् नामधारी सम्प्रदाय द्वारा पुरातन लुप्त हो रही गायन शैलियों (कीर्तन रूप में) को वर्तमान संगीतकारों, कीर्तनकारों तक पहुँचाने एवं उन्हें सजीव रखने का जो प्रयास है वह संगीत विकास के क्षेत्र में इनके महत्त्वपूर्ण एवं अद्वितीय योगदान का प्रमाण है। सत्गुरू जी द्वारा नवीन वाद्यों एवं बंदिशों का रचना, संगीत के प्रति उनका समर्पित व्यक्तित्व, आदर्श व्यवहार जहां शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों में सृजनात्मक कला का विकास करने में सहायक होगा साथ ही अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की सुरक्षा के प्रति भी उनको जागरूक करेगा। संगीत प्रेमियों/शोधार्थियों/विद्यार्थियों को सत्गुरू जगजीत सिंह द्वारा रचित नवीन तालों, बंदिशों, लय आदि की जानकारी उपलब्ध होगी, वहीं उनका व्यक्तित्व एवं कर्म सिद्ध करता है कि वे संगीत के निरन्तर विकास के लिए पूर्णतः समर्पित रहें। संगीत के प्रति उनका यह समर्पण भाव भावी एवं वर्तमान पीढ़ी को संगीत के प्रति समर्पित भावना रखने के लिए प्रेरित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

कौर, खरल सूबा, सुरिन्द्र (1997). प्रकाश पुंज, (भाग-1), भंगवत सिंह नामधारी, रूपनगर।

सिंह, नाहर (1872). नामधारी इतिहास (प्रथम भाग), सरदार नाहर सिंह, एम.ए., गाँव नंगल खुरद, पखोवाल रोड, लुधियाना।.

सिंह, जसविन्द्र, (1995). बेअंत पातशाह, नामधारी दरबार, श्री भैणी साहिब, लुधियाना।

सिंह, सनखत्रवी, आत्मा (1997)., श्री नानक राज, नामधारी दरबार, श्री भैणी साहिब, लुधियाना।

सिंह, 'वहिमी' तरन, (1974). जस्स जीवन (भाग-3), साधु सिंह किसान रामपुर बुड्डी माड़ी।

जयगोविन्द, शारदा डॉ., (2017). ए सागा आफ श्री सत्गुरू जगजीत सिंह जी, नामधारी दरबार, श्री भैणी साहिब, लुधियाना।

पत्रिकाएँ

संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, सहस्राब्दी अंक, संतोख सिंह सफरी (जनवरी-फरवरी 2001)

सतजुग , रमेश नगर, नई दिल्ली, (विशेषांक 2000), पृ. 98